

**वाहिनीपति** पुं. (तत्.) 1. वह सेनानायक जो किसी वाहिनी ब्रिगेड का नेतृत्व करने का अधिकार रखता हो 2. समुद्र।

**वाहियात** वि. (फा.) 'वाही' का बहुवचन 1. निरर्थक और व्यर्थ (बातें) 2. बेहूदा, अन्नर्गल स्त्री. 3. खुराफात, बदमाशी, आवारगी 4 पुं. तुच्छ, मूर्ख या निकम्मा (व्यक्ति)।

**वाही<sup>1</sup>** वि. (तत्.) 1. किसी दायित्व का वहन करने वाला 2. ढोने वाला 3. बहाने वाला जैसे- प्रवाही कार्यवाही 4. कार्य पूरा करने वाला पुं. रथ।

**वाही<sup>2</sup>** वि. (अर.) 1. टूटा-फूटा हुआ 2. कमजोर, निकम्मा, बेहूदा (स्त्री.) 3. बेसिर पैर की गंदी बातें 4. आवारा, बदचलन।

**वाही-तबाही** वि. (अर.) 1. निरर्थक, बेहूदा बातें, व्यर्थ में बकना, हाँकना 2. अश्लील, गंदी बातें।

**वाह्यांतर** वि. (तत्.) 1. जो बाहर और भीतर का हो 2. बाहर-भीतर।

**वाह्येन्द्रिय** स्त्री. (तत्.) 1. बाहरी विषयों को ग्रहण करने वाली पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ- आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा।

**वाह्लीक** पुं. (तत्.) 1. प्राचीनकाल में प्रसिद्ध एक देश जो गांधार के समीप स्थित था, आधुनिक रूप में प्रसिद्ध बलख-बुखारा का क्षेत्र 2. वाह्लीक देश का निवासी, बलख का रहने वाला 3. वाह्लीक देश की मुख्य प्रसिद्ध चीजें जैसे- घोड़ा, केसर 4. हींग, जो वाह्लीक नाम से जानी जाती थी।

**विंजन** पुं. (तत्.) 1. प्रकट करना, प्रकाशन 2. चिह्न, पदचिह्न 3. पका हुआ, विविध प्रकार के खाद्य पदार्थ, मसाले आदि 4. पंखा 5. वर्णमाला का स्वरहीन वर्ण जैसे- क्, ख्, ग्, घ्, ङ्, च्, द्, ज् आदि व्यंजन।

**विंद** पुं. (तत्.) 1. दिन का भाग विशेष 2. लाभ, प्राप्ति 3. समूह 4. बिंदु 5. धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

**विंदु** पुं. (तत्.) 1. पानी या किसी द्रव पदार्थ का एक कण 2. एक बूँद का परिमाण 3. हाथी के

शरीर पर बनायी हुई रंग की बिंदी 4. स्त्रियों के भौंहों के बीच बनी हुई बिंदी 5. रत्न का एक दोष 6. वर्णमाला के अनुस्वार का चिह्न 7. छोटा टुकड़ा 8. गणि. रेखागणित में रेखा का मूल सूक्ष्म सांकेतिक स्थान 9. हठयोग- तेज का प्रतीक स्वरूप नाद का व्यक्त रूप, जो इच्छा, ज्ञान, क्रिया रूप में जाना जाता है।

**विंदुजाल** पुं. (तत्.) शरीर में सौंदर्यवर्धन हेतु गोदने के द्वारा या छापकर विशेष अंगों पर बनाई गई बिंदियों का समूह।

**विंदुमाधव** पुं. (तत्.) काशी की एक प्रसिद्ध विष्णुमूर्ति का नाम।

**विंदुर** पुं. (तद्.) छोटी बिंदी, बूँदकी।

**विंदुसार** पुं. (तत्.) 1. प्राचीन भारत में चंद्रगुप्त मौर्य का पुत्र तथा जिसका पुत्र सम्राट अशोक हुआ।

**विंध** पुं. (तत्.) विंध्याचल पर्वत, विंध्य पर्वत दे. विंध्य।

**विंध्य** पुं. (तद्.) एक पर्वत श्रेणी जो भारत के मध्य में स्थित है तथा जो उत्तरभारत को दक्षिण भारत से अलग करती है, और जो पूर्वी घाट तथा पश्चिमी घाट नामक पर्वतों के उत्तरी छोर तक फैली हुई है।

**विंध्यकुट/विंध्यगिरि** पुं. (तत्.) 1. अगस्त्य मुनि 2. विंध्यरेणी दे. विंध्याचल।

**विंध्यवासिनी** स्त्री. (तत्.) 1. विंध्याचल के मिर्जापुर क्षेत्र में स्थित प्रसिद्ध दुर्गा की मूर्ति 2. दुर्गा देवी, पार्वती।

**विंध्याचल** पुं. (तत्.) 1. विंध्य पर्वत जो उत्तर और दक्षिण भारत के मध्य में स्थित है, विंध्याद्रि 2. विंध्यपर्वत की एक शाखा पर स्थित एक बस्ती जहाँ विंध्यावासिनी देवी (दुर्गा) का मंदिर है।

**विंशति** स्त्री. (तत्.) 1. बीस की संख्या (20), बीस की संख्या का सूचक अंक (20), एक प्रकार का व्यूह 'वि' बीस, बीस की संख्या में।